

रसिक दोउ निरतत रंग भरे।
रास कुंज में रास मंडल रचि, जनक लली रघु लाल हरे।।
अमित रूप धरि करि कछु चेटक, जुग जुग तिय मधि श्याम अरे।।

जयति परम मानिनी मान राखत नित रघुवर ।
जय--जय पिय रस पगीं प्रेम पूरित उदार तर ॥५७॥
जयति सजीवनि मूरि प्राण की प्राण हमारी ।
जय--जय 'सीताशरण' रहौं निशिदिन वलिहारी ॥५८॥
जयति सखिन सँग प्राणनाथ युत नवल विहारिनि ।
जय-जय सिय स्वामिनी मधुर मनहर छवि धारिनि ॥५९॥
जयति प्रिया मुख कंज मंजु मन मधुप समाना ।
जय--जय सीताशरण प्राणधन सुखद सुजाना ॥६०॥

दो०-जयति-जयति पिय हिय लगी, सिय स्वामिनी उदार ।
जय-जय सीताशरण नित, जीवन प्राण अधार ॥ १ ॥
जयति-जयति प्रीतम प्रिया, सहचरि बृन्द अपार ।
जय-जय सीताशरण मैं, रहौं सदा वलिहार ॥ २ ॥

इति श्री युगल रहस्य माधुरी बिलासे, बिबाहोत्तर
देव कन्या रस रासे, सीताशरण सुमति प्रकाशे
दशमोऽध्याय: सम्पूर्णम्

❋ एकादशोऽध्याय: ❋

गन्धर्व कन्या रास प्रकरणम्

छन्द रोला:-

परम विचित्र पुनीत सुखद अति गोप्य चरित वर ।
चाहत वर्णन करन सूत हिय अति उमंग भर ॥ १ ॥
याते सहित सनेह नमत अंजनी कुमारहिं ।
पुनि--पुनि करत प्रणाम मुदित मन परम उदारहिं ॥ २ ॥

जो संगीत सु शास्त्र मथन में मन्दर गिरिसम।
सुन्दर सुखद सुजान सरस सब भाँति अनूपम ॥ ३ ॥
सादर करै प्रणाम वाहि सद्बुद्धि प्रदायक।
महाँ शक्ति सम्पन्न श्रेष्टतम शुचि सब लायक ॥ ४ ॥
श्री साकेत नरेश नृपति श्री चक्रवर्ति वर।
तिन के अति प्रिय पुत्र राम अभिराम मधुर तर ॥ ५ ॥
सो जिन के आराध्य देव हिय बसत निरन्तर।
ध्यावत सिय रघुवीर मधुर तर चरित सुखद वर ॥ ६ ॥
मदन मान मद मथन मधुर प्रिय सुन्दर सूरति।
हिय में बिलसति सतत सिया रघुवर सुठि मूरति ॥ ७ ॥
सर्व समर्थ उदार रसिक हिय मोद बढ़ावन।
श्री अंजनी कुमार सिया रघुवर मन भावन ॥ ८ ॥
नमस्कार करि तिनहिं बहुरि श्री सूत बचन वर।
बोले सहित सनेह हृदय में अति उमंग भर ॥ ९ ॥
पुनि रघुवीर सुधीर सकल इन्द्रिन अविकारी।
अजित अखण्ड अनूप विरज रस निधि मनहारी ॥१०॥
मधुर मूर्ति श्रीराम परम अभिराम प्रदायक।
प्रेमिन प्राणाधार सतत सब विधि सब लायक ॥११॥
विपुल नायिकन बिबश रहत तिनको निज बश करि।
यद्यपि पूरण काम तदपि सखियन सु प्यार परि ॥१२॥
अतिसय लम्पट बने करत लीला सुख कारी।
जो सब भाँति अकाम काम सर व्यथित लखारी ॥१३॥

जो सर्वेश स्वतन्त्र पूर्ण तम ब्रह्म ज्ञान घन।
परमानन्द स्वरूप सुखद रस मय उदार मन ॥१४॥
सोइ बनितन सुख स्वाद देन हित मनहुँ मदन सर।
अतिसय व्यथित लखात करत असकेलि मधुर तर ॥१५॥
पुनि पिय परम प्रवीण प्रेम पूरित मृदु बयनन।
बोले बचन विशेष बिमल दायक सुख चयनन ॥१६॥
ऐ गन्धर्व कुमारि निकर संगीत कला निधि।
नृत्य गान मधि कुशल परम विज्ञा सबही बिधि ॥१७॥
प्राण प्रिया श्री जनक सुतहिं सुख स्वाद देनहित।
प्रगटहु सुठि संगीत नवल बिद्या उदार चित ॥१८॥
देव कुमारी अन्य विपुल वामा समुदाई।
यथा उचित अधिकार स्वआसन आनँद पाई ॥१९॥
बैठो प्यारी पास चित्त निज सावधान करि।
निरखो अनुपम नृत्य सुनो संगीत मोद भरि ॥२०॥
अनुमोदन सब करहु भेद समझो मन माहीं।
निरखो इन की कला कुशलता किमि दर्शाहीं ॥२१॥
में सबहिन के मध्य होहुँ स्थित साक्षी बन।
अपर स्वाद सुख लेइ न अधिकारी कोइ शुचि मन ॥२२॥
में अवनीश कुमार दोष गुन सबहिन केरे।
कहि दैइहों स्पष्ट हृदय लहि मोद घनेरे ॥२३॥
देना मुझे न दोष आप सब रोश न करना।
कमी बढ़ी गुनि स्वयं परम आनँद हिय भरना ॥२४॥

इमि आयसु दै सबहिं उचित आसन बैठाई।
विपुल कोलाहल प्रगट शान्त वाको करवाई ॥२५॥
श्री विदेहनन्दिनी संग मंगल मय सुठि तर।
सिंहासन अति दिव्य विराजे हिय उमंग भर ॥२६॥
प्रभु बिहार रुचि जानि दिव्य वर महलन माहीं।
बहत सुगन्धित वायु निशा में सरस सुहाहीं ॥२७॥
कलित कपूरन शिला सुवासित सुखद पवन वर।
शीतलता संयुक्त मन्द गति परम मोद कर ॥२८॥
दिव्य सरयु सरि सु तट दिव्य बन में नव नागर।
नवल नायिकन संग रमत रघुवर रस सागर ॥२९॥
यद्यपि ग्रीष्म सु रैन तदपि विधुकिरण सरस तर।
शीतलता संयुक्त ऊष्णता लेश न दुख कर ॥३०॥
विपुल नवल नागरिन मनोहर संग रंग भर।
करत विलास विनोद विविधि विधि अनुभव सुख कर॥३१॥
श्री मैथिली सहाय करहिं सब क्रियन मझारी।
पावत परमानंद प्रेम पूरित पिय प्यारी ॥३२॥
येहि बिधि यदपि स्वतन्त्र तदपि निज प्रिया सहारे।
सुख रस अनुभव करत राजनन्दन सुकुमारे ॥३३॥
तेहि छण की सो केलि कलित मन हर अति पावन्।
करत स्पृहा शम्भु निरखि रस मयी सुहावन ॥३४॥
पिय हिय रुचि को जानि विपुल गन्धर्व कुमारी।
नृत्य गान संगीत कला कुशला मन हारी ॥३५॥

पिय अवराधन हेत मधुर संगीत सरस तर।
करि सु मंगलाचरण कीन प्रारम्भ हर्षि उर ॥३६॥
सबने निज--निज वेष परस्पर भिन्न बनाये।
तदनुसार मन हरन नवल शृंगार सजाये ॥३७॥
विरचे तीन विभाग एक कर गीत मनोहर।
बाजा रहे बजाय अपर अति सुखद मधुर तर ॥३८॥
नृत्यत तीसर वृन्द परम आनन्द समाई।
तीनों भाग मिलाय सरस संगीत कहाई ॥३९॥
पुनि तेहि राम मझार भाग त्रय संगीतहिं करि।
प्रगट कियो मन मुदित हृदय में अति उमंग भरि ॥४०॥
प्रथम नाम सम्पूर्ण सप्त स्वर सों तेहि गावहिं।
द्वितीय सु औडव नाम पंच स्वर प्रगट लखावहिं ॥४१॥
तीसर खांडव नाम अहैं षट स्वर जेहि माहीं।
पुनः तृतीय सु ग्राम भेद प्रगटत हर्षाहीं।४२॥
अलंकार सब ताल रीति इक्किस प्रकार की।
शुभ मूर्छना समेत प्रगट करि सुखद सार की ॥४३॥
श्री बसन्त सुठि सुखद भैरव राग मन भावन।
पंचम मेघ सुराग वृहन्नाटकहु सुहावन ॥४४॥
ये षट राग उदार पुरुष के रूप बताये।
अब इन की रागिनी सुनहु जो सखि प्रगटाये ॥४५॥
गौरी अरु मालती केदारी त्रिवणी मन हर।
मधु मालती पहाड़िकादि श्री राग प्रिया वर ॥४६॥

ललिता टोड़ी देवगिरी देशी सु विराटी।
हिंडोली रागिनी पष्ट प्रगटित परिपाटी ॥४७॥
सुन्दर राग वसन्त केर यह सब वर वामा।
जो गावै अरु सुनै देत अतिसय अभिरामा ॥४८॥
गुणाकरी भैरवी गुर्जरी अरु बङ्गाली।
रेवा बहुली आदि रागिनी परम रसाली ॥४९॥
ये षट भैरव राग केर हैं वराङ्गना वर।
गावत सुनत सनेह सहित हिय अति प्रमोद कर ॥५०॥
कर्नाटकी विभास माल श्री अरु बड़हंसी।
भूपाली मन हरन सरस तर परम प्रसंसी ॥५१॥
पटमंजरी रसाल षट रागिनी परम सुखद वर।
ये सब पंचमराग केर वामा उदार तर ॥५२॥
मल्लहारी सोरठी कौशिकी अरु गंधारी।
हरिश्रृंगारी सरस महा सावेरी प्यारी ॥५३॥
मेघ राग की बराङ्गना ऊपर बतलाई।
अब नारायण राग के सुनिये मन लाई ॥५४॥
कामोदी नाटिका सुभग कल्याणी मनहर।
नटहम्मीरी सालङ्गी आभीरी सुख कर ॥५५॥
इमि छत्तिस रागिनी अहैं ऋतुराग प्रिया वर।
षट ऋतु के षट राग षट प्रिया एक-एक कर ॥५६॥
इमि छै रागन युक्त सकल रागिनी प्रगट करि।
सब गन्धर्व कुमारि मुदित मन हिय उमंग भरि ॥५७॥

ये सब राग रसाल कण्ठ में सखियन केरे ।
सन्तत करत निवास प्रगटि सुख स्वाद घनेरे ॥५८॥
देवत श्री रघुवरहिं पुनः मधु देशी सुख कर ।
भूपाली भैरवी माधवी मल्लहारी वर ॥५६॥
वेलावली उदार सामगुर्जरी सुखद वर ।
बङ्गाली मनहरन रागिनी परम सरस तर ॥६०॥
भैरव ललित बसन्त धना श्री पंचम पावन ।
देशकार अरु मेघराग मालवश्री भावन ॥६१॥
प्रातसमय से प्रथम प्रहर तक यही राग वर ।
गाये जावत नित्य सबहिं अतिसय प्रमोद कर ॥६२॥
सावेरी कौशिकी गुर्जरी गुणाकरी वर ।
पटमंजरी रसाल भैरवी सुख कर मन हर ॥६३॥
रामकली सोरटी अपर रेवा सुख दाई ।
एक प्रहर से द्वितीय प्रहर तक लगत सुहाई ॥६४॥
तीसर प्रहर मझार विराटी अरु गांधारी ।
देशी नागशद्वी टोडिका अति सुख कारी ॥६५॥
कामोदिका कुड़ाय कादि शङ्कराभरण युत ।
गावहिं सब गन्धर्व सुता अतियस सुख सँइयुत ॥६६॥
श्री मालव ये राग रागिनी गौड़ी मन हर ।
त्रिवणी अति कमनीय परम प्यारी अति प्रिय कर ॥६७॥
सालङ्गनन्दन अपर सु नट कल्याण राग वर ।
केदारी कर्णाटी बड़हंसी अति सुख कर ॥६८॥

अमेरिका रागनी पहाड़ी ये सब प्यारी।
तृतिय प्रहर से अर्ध रात्रि तक गाय सुखारी ॥६९॥
होवहिं प्रिय सहचरी राग श्री शिशिर काल में।
गावहिं लखि पिय रूप सुछवि फँसि प्रीति जाल में ॥७०॥
यह श्री राग रसाल सिया वल्लभ को अति प्रिय।
इसी हेतु गन्धर्व सुता गावहिं सादर हिय ॥७१॥
निज रागिनन समेत राग बसन्त मन भावन।
गावहिं सु ऋतु बसन्त माहिं सब भाँति सुहावन ॥७२॥
श्री विदेहनन्दिनी काहिं यह राग परम प्रिय।
येहि ऋतुकी वर केलि प्रियाको अति भावति जिय ॥७३॥
ऐसेहि ग्रीषम माहिं राग भैरव सुख दाई।
निज रागिनिन समेत सखी गावहिं उमगाई।७४॥
इमि रागिनिन समेत राग पंचम अति सुख कर।
शरद सु ऋतु में सखी प्रेम युत गावहिं मुद भर।७५॥
ऐसेहिं मेघ सु राग रागिनिन युत अति प्रिय कर।
वर्षा ऋतु में लगत सखी गावहिं उमंग भर ॥७६॥
यह सुठि राग रसाल प्रिया प्रीतमहिं परम प्रिय।
गावहिं सखी सनेह सहित उमगाय मुदित हिय।॥७७॥
नट नारायण राग हेम ऋतु में सखि गावहिं।
वाकी प्रिय रागिनी रघुवरहिं मन अति भावहिं ॥७८॥
बोलत बचन रसाल सूत हे शौनक मुनि वर।
राग भेद बहु भाँति अहै वर्णन ग्रन्थान्तर ॥७९॥

श्री रघुवर प्रिय भक्त वायु नन्दन रमाल उर।
गीतामृत नित श्रवति स्वमुख वसि चित्र कूट वर ॥८०॥
मैंने यह सिद्धान्त उन्हीं का तुमहिं सुनायो।
यद्यपि विपुल प्रकार भेद ग्रन्थन में गायो ॥८१॥
सुनिये अपर प्रकार राग के भेद सुहाये।
मैंने जो कछु श्रवण कियोनिज सुमति बसाये ।८२॥
भैरव कौशिक मेघराग दीपक श्री सुन्दर।
पुनि हिंडोल सु राग अहैं यह पुरुष रूप वर ॥८३॥
मध्यम स्वर जेहि केर आदि में यथा वराटी।
बङ्गाली भैरवी सैन्धवी सुठि परिपाटी ॥८४॥
ये सब भैरव राग केर पत्नी कहलावैं।
पावैं परमानन्द सुजन जो सुनहिं जो गावैं ॥८५॥
ककुभा खंभावती सु टोड़ी गुणकी गौरी।
ये कौशिक वर राग केर पत्नी प्रिय औरी।८६॥
ललिता पटमंजरी रागिनी रामकरी वर।
देशी वेलावती पांच रागिनी मोद कर।८७॥
ये हिंडोल सु राग केर पत्नी बतलाई।
अब दीपक वर राग प्रिया सुनिये मन लाई।८८॥
केदारी कानडा नाटिका देशी मनहर।
कामोदी ये पाँच प्रिया दीपक सु राग कर ॥८९॥
माल श्री मालवी धनाश्री और बसन्ती।
सुन्दर आसावरी रागिनी पाँच लसन्ती ॥९०॥

ये पाँचो रागिनी अहै श्रीराम प्रिया वर।
अब सुनिये श्री मेघ राग पत्नी प्रमोद कर ॥९१॥
मल्लहारी गुर्जरी टंक भूपाली प्यारी।
देशकारि रागिनी पाँच रस मय सुख कारी ॥९२॥
इमि गन्धर्व कुमारि पिया सन्मुख हर्षाई।
गावहिं राग अनन्त समय अनुसार सुहाई ॥९३॥
यह श्री पवन कुमार कहा श्री हनूमान वर।
पिय प्रसन्नता हेत सखी बहु भाँति यत्न कर ॥९४॥
एक सु पद अष्टाङ्ग बँधा पुनि अपर सु पद वर।
गावहिं सखि अष्टाङ्ग खुला हिय अति उमंग भर ॥९५॥
इमि श्री राम समाज माहिं सखि युगल भाँति प्रिय।
गावहिं गीत रसाल फँसी छवि जाल मुदित हिय ॥९६॥
एक गान के योग्य अपर सुन्दर प्रबन्ध वर।
रूपक तृतिय चतुर्थ अहै उच्चारण सुख कर ॥९७॥
पंचम इष्ट सु बस्तु पंच बिधि इमि सु गीत वर।
गावहिं सखी सनेह सनी पिय हिय प्रमोद कर ॥९८॥
हिय उद्‌ग्रार समेत साथ मिलि उच्चस्वरन प्रिय।
गावहिं प्रिय नायिका बृन्द पगि पिय सनेह हिय ॥९९॥
येहि बिधि गान की रीति सु ध्रुवसंज्ञा कहलावै।
याको "सीताशरण" ध्यान में कोइ-कोइ ध्यावै ॥१००॥

दो०–येहि बिधि सखी समाज में, गान भेद सुख सार।
अष्ट अङ्ग संयुक्त हो, भोग सु अष्ट प्रकार ॥१॥

ऐसेहि होत प्रवन्ध केर षट अङ्ग उदारा।
स्वर अरु सु पद मिलाय कपाट सु ताल उचारा ॥ १ ॥
एक अमल आनन्द कन्द पुनि चक्रवर्ति सुत।
नाम परम अभिराम राम अनन्त श्री संयुत ॥ २ ॥
याते रघुवर रास माहिं बहु विधि प्रवन्ध वर।
गावहिं मिलि गन्धर्व सुत वर गान मोद कर ॥ ३ ॥
सुन्दर छन्द विचित्र चातुरी सखि गण गावहिं।
परमानन्द प्रमोद महाँ अपने उर पावहिं ॥ ४ ॥
षष्ट अङ्ग संयुक्त मेदिनी नामक सुन्दर।
गावहिं सरस प्रबन्ध परम मनहरन सुखद वर ॥ ५ ॥
पंच अङ्ग सम्पन्न नन्दिनी नाम सरस तर।
वर प्रवन्ध सुख करन भरन मन रमन मोद कर ॥ ६ ॥
प्रिय दीपिनी प्रवन्ध चारु तर सुखद सुहावन।
चतुर अङ्ग संयुक्त सखी गावहिं मन भावन ॥ ७ ॥
तीन अङ्ग सम्पन्न लोक में सुठि प्रबन्ध वर।
वह पावनी सुनाम सरस मन हरन मोद कर ॥ ८ ॥
युगल अङ्ग संयुक्त सु तारावली परम प्रिय।
गावहिं मधुर प्रवन्ध सखी गन परम मुदित हिय ॥ ९ ॥
इमि प्रवन्ध वर पंच भाँति गावहिं वर वामा।
सुठि शास्त्री संगीत विज्ञ वारिधि श्री रामा ॥१०॥
तिमि रघुनन्दन प्रियाँ सकल गन्धर्व कुमारी।
भली भाँति संगीत विज्ञ रस निधि मन हारी ॥११॥

वर्ण वर्णसर गद्य अंकचारिणी कन्द वर ।
गज तुरंग कैवाड़ सु द्विपदी लीला मन हर ॥१२॥
चक्रवाल क्रौंचपद स्वार्थ ध्वनि कुटिनी प्यारे ।
आर्या गाथा द्विपथ राग तोटकहू न्यारे ॥१३॥
सुठि कलहंस कदम्बराग मातृका सुहावन ।
नद्यावर्त सु पंचराग तालेश्वर भावन ॥१४॥
तालावर्ण रसानुराग श्री रंग मधुर तर ।
श्रीविलास मन रमन सु पचभंगी अति सुख कर ॥१५॥
मातलिंक अति सरस ललित पंचानन मन हर ।
चतुष्पदी अति सुखद सु त्रिपदी अतिसय मुद कर ॥१६॥
बस्तु नाम षटपदी बिजय सुठि त्रिपथ चतुरमुख ।
सिंहलील हसलील सु दण्डक दायक अति सुख ॥१७॥
झम्पक कन्दुक कलित त्रिभंगी हरि लासक वर ।
सुठि सुरांक प्रिय परम सुदर्शन अतिसय सुख कर ॥१८॥
श्री वर्द्धन कमनीय हर्षवर्द्धन प्रमोद कर ।
चर्य्या अरु चरचरी बदन वर्द्धन नवीन तर ।.१९॥
वीरश्री पद्धड़ी राहड़ी धवल चारु तर ।
ललित मंगलाचार सुभग मंगल प्रमोद कर २०॥
ठोल्लरी श्री सूत कहत हे द्विज शौनक वर ।
इमि प्रवन्ध वर राम रास में भये मधुर तर ।।२१॥
और इनहिं श्रीराम चरण पंकज सेवक वर ।
वर्णेउ पवन कुमार हृदय में अति उमंग भर ।.२२॥

प्रथमहिं ध्रुव फिर मण्ठ और प्रतिमण्ठ सुखद वर ।
सारुक अरु अड्डताल रासताला अति मन हर ॥२३॥
एकताल ये सप्त सखी रघुवर सु रास में ।
गावहिं सहित सनेह पगीं हिय अति हुलास में ॥२४॥
ये सब श्री रघुवीर काहिं अतिसय प्रिय आहीं ।
षोडश भाँति विभाग कहे सु प्रवन्धन माहीं ॥२५॥
साम वेद मर्मज्ञ परम विद्वान पवन सुत ।
वर्णे श्री मद्रास दूत हनुमान नेह युत ॥२६॥
अपर प्रवन्ध अनूप आयु श्री बल वर्द्धक वर ।
सुठि चयन्त उत्साह मधुर शेखर अति मन हर ॥२७॥
निर्मल कुन्तल चार कमल नन्दन चन्द्रेश्वर ।
कामद विजय रसाल तिलक जय मंगल प्रिय कर ॥२८॥
परम सुभग कन्दर्प ललित क्रम से बतलाये ।
वर्णे पवन कुमार सुने हम सखियन गाये ॥२९॥
एकादश अच्छरन केर सुठि आदि ताल वर ।
श्री शृँगार रस भरित सखी गावहिं उमंग भर ॥३०॥
सब गन्धर्व कुमारि खण्ड करि सुठि प्रवन्ध वर ।
गावहिं भरीं उछाह सुनत हिय परम मोद कर ॥३१॥
द्वादश अच्छर केर खण्ड करि एक वीर रस ।
गावहिं सखि निस्सार ताल सुनि पिय जाके बस ॥३२॥
शेपर येहि कर नाम तियन सौभाग्य प्रदायक ।
गावहिं प्रिय सहचरी सुनहिं रस वश नव नायक ॥३३॥

ऐसे ही उत्साह मंठ प्रति युगल ताल से।
तेरह अच्चर केर प्रवन्धहु हिय रसाल से ॥३४॥
गावहिं सखियाँ मुदित हास्य रस में सुखपाई।
पावहिं परमानन्द प्रेम पूरक रघुराई ॥३५॥
चौदह अच्चर केर मधुर वर राग चारु तर।
करुणा रस में सखी अश्वलीला युत सुख कर ॥३६॥
गावहिं क्रीड़ा ताल साथ जो देइ मिलाई।
निर्मल तिथि वर्णक प्रवन्ध तब यह कहलाई ॥३७॥
पन्द्रह अच्चर केर यहू शृंगार सु रस में।
गावहिं सहचरि वृन्द सुनत होवत पिय बस में ॥३८॥
लघु तालेश्वर ताल सहित षोड़श अच्चर वर।
कुन्तल अद्भुत सु रस माहिं गावहिं प्रमोद उर ॥३९॥
झम्पकताल के सहित कमल नामक प्रवन्ध वर।
विप्रलम्भ शृँगार माहिं गावहिं सनेह भर ॥४०॥
पुनि श्री राम उदार खण्ड करि याहि बतायो।
सत्रह अच्चर केर सुनत सखियन सुख पायो ॥४१॥
अट्ठारह अच्चरन केर सुठि चार नाम कर।
है प्रबन्ध निःसारुताल के सहित सुखद वर ॥४२॥
वीर सु रस में सखी हर्षि गावहिं उमगाई।
अपर सुनन्दन नाम ताल एक संग मिलाई ॥४३॥
गावहिं सखि शृंगार वीर दोउ रस में मुद भरि।
पुनि गन्धर्व कुमारि विपुल कौतुक कलोल करि ॥४४॥

वय किशोर सम्पन्न परम मन रमन मधुर तर।
निकर नायिका नवल नेह पागीं उदार उर ॥४५॥
उन्निस अच्छर सहित यही वर राग सुहावन।
वीर हास्य श्रृंगार माहिं गावत मन भावन ॥४६॥
याही को वर नाम चन्द्र शेखर प्रिय आही।
पावै परमानन्द सुजन जो गावै याही ॥४७॥
इमि प्रतिमण्ठ सुताल युक्त विंशत अच्छर वर।
खण्डक नाम प्रबन्ध ललित इक्किस अच्छर कर ॥४८॥
जब दोउ होवत साथ गीत खण्डक कहलावत।
संज्ञा है कामोद कामिनिन मन अति भावत ॥४९॥
श्री श्रृँगार रस माहिं होत वांच्छित फल दायक।
गावहिं नव नायिका सुनत रघुवर नव नायक ॥५०॥
बाइस अच्छर केर अहै प्रिय विजय राग वर।
गाया जावत हास्य माहिं सबही को सुख कर ॥५१॥
द्वितीय ताल के साथ मिलाकर सखियन संगा।
गावत श्रीर रघुवीर पगे अतिसय रस रंगा ॥५२॥
अभिमत फल दातार प्रियन युत प्रीतम काहीं।
परमानन्द प्रवाह परे सब हिय हर्षाहीं ॥५३॥
आदि ताल के साथ मिलाकर एहि को कोई।
गाय सकल श्रृंगार हास्य करुणा में सोई ॥५४॥
है प्रबन्ध कन्दर्प ललित तेइस अच्छर कर।
गावहिं पिय सहचरी उमगि हिय में सनेह भर ॥५५॥

सकल भोग दातार सखिन मन आनँद कारी।
गावहिं परमानन्द पगीं गन्धर्व कुमारी ॥५६॥
इमि प्रवन्ध अति सुखद ललित चौविस अक्षर कर।
क्रीड़ाताल सँयुक्त बिपुल गन्धर्व सुता वर ॥५७॥
वीर और श्रृंगार रसन में प्रमुदित गावहिं।
जय मंगल येहि केर नाम बुध जन बतलावहिं ॥५८॥
पच्चिस अक्षर केर सु ध्रुव के साथ मिलाई।
गावै तो यह तिलक नाम वाला कहलाई ॥५९॥
चक्रवर्ति महराज सुवन श्री राम चन्द्र वर।
तिनकी प्रिय नायिकन काहिं अति सुभद मोद कर ॥६०॥
छब्बिस अक्षर सहित गान येहि को सखि करहीं।
याको ललित प्रवन्ध नाम सब आनँद भरहीं ॥६१॥
सर्व सिद्धि दातार अहै यह अति मुद कारी।
सुन्दर मधुर अलाप करहिं रघुवर प्रिय नारी ॥६२॥
ललना गन कमनीय सहस्त्रन नव छवि वारी।
करैं गान मन हरन सरस तर अति सुखकारी ॥६३॥
इसके बाद श्रृँगार वीर आदिक रस मन हर।
होवत इनके नाम येही प्रवन्ध तुरंग वर ॥६४॥
चन्द्रप्रकाश सु नाम राग प्रिय सरभलील वर।
पुनि नन्दन नव रत्न आदि सुठि गीत मधुर तर ॥६५।
गाये मिलि गन्धर्व सुतनि आनन्द समाई।
सर्व दोष से रहित गीत श्रीराम कहाई ॥६६॥

सकल गुणन संयोग अहै येहि में सुख दाई ।
जाको अन्तःकरण शुद्ध सोई सक गाई ॥६७॥
जो गावै श्री राम गीत अतिसय सुख पावै ।
'सीताशरण' सनेह मगन पिय छवि हिय आवै ।६८॥
अहैं सहस्त्रन भेद याहि विधि अति प्रसिद्ध तर ।
जो गाये गन्धर्व सुतनि वर गीत मुदित उर ॥६९॥
रघुवर रास मझार वाद्य वर चार प्रकारा ।
प्रथम अहै तत, अपर, सुषिर, घन, तृतिय उदारा ॥७०॥
है चतुर्थ आनद्ध, सप्त तन्त्री वर आहीं ।
यह सब तत के भेद सकल तन्त्री कहलाही ॥७१॥
नकुला चित्रावीण विपंची अति सुखकारी ।
अतिसय प्रिय उन्मत्तकोकिला सुठि मन हारी ॥७२॥
आलापी, किन्नरी, पिनाकी यही सप्त वर ।
हैं सब तत के भेद सकल तन्त्री प्रमोद कर ॥७३॥
वंशपाट, पाटिका, अपर मुरली सु मधु करी ।
काहल, शंख अनूप सुषिर के भेद प्रिय करी ॥७४॥
पटाः मर्दल, ढक्का, करटा घन्टा, मन हर ।
रुजा सु डमरू अपर ललित धक्का डक्कली वर ॥७५॥
अरु डक्करी, रसाल दुन्दुभी, त्रिवली, भेरी ।
निःसाणी, तुम्बुकी, नद्ध के भेद कहेरी ॥७६॥
तालकांस्या ताल, क्षुद्रघण्टिका मनोहर ।
घन्टा अरु जयघन्ट सु कम्रा सुकरताल वर ।।७७॥

ये सब विपुल सु भेद अहैं घन वाद्य केर प्रिय।
तिन में अन्य लखात सुनिय सो सावधान हिय ॥७८॥
ये दश प्राण समेत ताल सब रास मझारी।
स्थित हैं बिन ताल न प्रिय संगीत कदारी ॥७९॥
काल, मार्ग, लय, क्रिया, अङ्ग, गृह, जाति, कला, वर।
यति, प्रस्तारक, येही प्राण दश अहैं ताल कर ८०॥
जहाँ गीत अरु वाद्य नृत्य सुठि ताल समेता।
वहीं पूर्ण संगीत सकत कहि विज्ञ सचेता ८१॥
अब देशी अरु मार्ग भेद यह ताल युगल वर
प्रथम सुनिय मन लाय शुद्ध, शीलक, रसाल तर ८२॥
अरु द्वितीय संकीर्ण ताल इमि भेद अपारा
तेहि में चंचत्पुट सु अचंचत्पुट सुख सारा। ८३॥
पुनि षट भेद सँयुक्त अहै पुत्रक प्रवन्ध वर।
उद्घट अरु संयकेष्ट भेद यह मार्ग ताल कर ८४।
आदिताल, अरु द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पंचम वर।
निशङ्कलील, रसाल सिंह, दर्पण विक्रम, कर।८५॥
सिंहलील, रतिलील, वीर, विक्रम, सुरङ्ग वर।
यति श्रीरङ्ग, सु वर्ग्य, ललित कन्दर्प मोद कर ॥८६॥
लग्नक, अरु प्रत्यङ्ग, सिंह, विक्रीडति, मन हर।
सु गजलील, पुनि हंसलील, अरु वर्णभिन्न वर ॥८७॥
रंग, त्रिभिन्न, सु घोतरंग, राजहिं प्रदीपकम्।
अति सुन्दर मन हरन राज चूड़ामणि लसितम् ॥८८॥

राजताल, अरु वर्णताल, जय, वनमाली, वर ।
हंसनाद, अरु सिंहनाद, कुडुक्वक प्रमोद कर ॥८९॥
तुरंगलील, सु रंग, सिंह, अरु सरमलील वर ।
नन्दन, मण्ठक, भरण, कोकिला प्रिय, अति मन हर ॥९०॥
निःसारुक, अरु राज, मल्लिका, मोद, विजय वर ।
विद्याधर, आनन्द, सु जयमङ्गल, क्रीडा, कर ॥९१॥
श्री, जयश्री, मकरन्द, कीर्ति, श्रीकीर्ति, प्रीत, प्रिय ।
विजय, विन्दुमाली, सम, नन्दन, जानहिं वुध जिय ॥९२॥
अति रुचि कर मण्ठिका, सुदीपक, दीक्षण, मन हर ।
अभिनन्दन, विषमादि, उदङ्की, नन्दनादि वर ॥९३॥
कन्दुक, काल सु मलक, एकताली, दोचुली, वर ।
कुमुद, चतुस्ताली, अनङ्ग, अरु कील, मोद कर ॥९४॥
लघु शेखर, अरु राय, कङ्क, बसन्त, मन भावन ।
प्रतापशेखर, सुखद रुचिर झम्पा प्रिय पावन ॥९५॥
गज झम्पा, अरु मदन, चतुर्मुख, रति, लोचन, वर ।
पार्वती, पतिललित, ललित, प्रतिमण्ठ, मोद कर ॥९६॥
गारुणि, लीलाकरण, राजनारायण, मन हर ।
लक्ष्मीश, अरु जनक, ललितप्रिय, वर्द्धन सुख कर ॥९७॥
श्रीनन्दन, षटताल, रागवर्द्धन, अन्तर, वर ।
क्रीडा, हंसोत्सव, विलोकिता, हिय आनन्द कर ॥९८॥
पति सारस, गजवर्ण, सिंह, चण्डक, सु कर्ण, वर ।
चन्द्रकला, लय, स्कन्द, धरा, द्रुतालिका, मन हर ॥९९॥

गौरी द्वन्द मुकुन्द सु कलध्वनि सरस्वती प्रिय ।
गावत (सीताशरण) सखी उमगाय मुदित हिय ॥१००॥
प्रिय मृगाङ्क निःशङ्क देव शार्ङ्ग सुहावन ।
ललित राजमार्तण्ड परम सुठि अति मन भावन ॥१०१॥

दो०—सुठि कुविन्दु कण्ठाभरण, भग्नताल सुख सार ।
राजताल सीताशरण, परमानँद दातार ॥ २ ॥

ये सब देशी ताल नाटच आचार्य रसिक वर ।
सिय वर भक्ताचार्य वायु नन्दन उदार तर ॥ १ ॥
येहि विधि वर्णन कीन कहे हम तुमहिं सुनाई ।
अब सुनिये पुनि अपर ताल के भेद सुहाई ॥ २ ॥
कन्दुक अरु चितनाम परम सुठि सन्निपात वर ।
ईडावान सु वृह्मताल चतुस्ताल मोद कर ॥ ३ ॥
कुम्भताल लच्मी और अर्जुन मन हारी ।
ललित कुण्डनाचीति कलित बाला सुख कारी ॥ ४ ॥
रुन्नी पतिशेखर सु महासन्नी मन भावन ।
परम सुखद कल्याण आदि प्रिय मधुर सुहावन ॥ ५ ॥
चन्द्रताल उड़ताल कहे यों पाँच प्रकारा ।
तिमि मंठक अरु जगंणताल को कियो विचारा ॥ ६ ॥
यति पृथ्वी पाताल अष्ट कुण्डलिका मन हर ।
संच कुण्डलीताल कुण्डली चन्द्र लोक वर ॥ ७ ॥
विष्णु विलम्ब सु अमृत अरु झोंवड़ सु ताल वर ।
इस के भी दो हेतु नीड़ झोंवड़ अति सुख कर ॥ ८ ॥

तिर्य्यक मंच सु चक्र मेरु अरु स्वर्ण मोद कर ।
चक्रमंठवरताल रंच कुल सँयोग शेखर ॥ ९ ॥
चतुर स्नक श्री विष्णु सु मण्ठक अरु विद्याधर ।
गद्यताल नर्तक सु हंस मन्मथ अनन्द कर ॥१०॥
नारायण निःशङ्क सूनु अरु शरमशील वर ।
यूप अपर अरु त्रिष्णु तल्ल रति परम मोद कर ॥११॥
महाचित्र अरु चित्रवर्त कङ्काल सुहावन ।
सु हरिवर्त अति सुखद विवर्तन अति मन भावन ॥१२॥
अभंग शेखर हंस चित्रपुट कुमुदताल वर ।
प्रिय मृगांक कलकंठ परम उत्साह मोद कर ॥१३॥
उत्सावताल सु विजयताल अरु पद्मताल वर ।
ललित सुदर्शनताल और कन्दुक अनन्द कर ॥१४॥
इतने ताल रसाल राम रमणी मन हारी ।
प्रगट किये गन्धर्व सुतनि हिय परम सुखारी ॥१५॥
येहि विधि बिपुल सु ताल भेद श्रीराम रास वर ।
अतिसय अद्भुत अधिक भयो परिकर प्रमोद कर ॥१६॥
कहत सूत ये सकल ताल के भेद सुहावन ।
वर्णे श्री मद्व्यास देव गुरु वर मन भावन ॥१७॥
मैं उनके मुख सुने सकल सों तुमहिं सुनाये ।
अपर भेद कछु सुनहु कहौं जो परम सुहाये ॥१८॥
मेरु अहैं द्रुतमेरु और लघुमेरु सरस तर ।
पुनि गुरु मेरु संयोग मेरु प्लुत मेरु मोद कर ॥१९॥

योग मेरु ये षष्ट अहैं नर मेरु सुहावन।
नष्ट तथा उद्दिष्ट छन्द बहुतक मन भावन ॥२०॥
इन सबको बिधि सहित सखिन आनन्द समाई।
दिखलाया श्रीराम रास में हिय उमगाई ॥२१॥
नृत्य सु भेद अपार अमित संख्या कछु नाहीं।
जो श्रीरघुवर रास माहिं सखि प्रगट कराहीं ॥२२॥
यथा प्रवन्ध सुगीत ताल असंख्य दिखलाये।
तथा नृत्य के भेद विपुल सखियन प्रगटाये ॥२३॥
मुखचाली अरु सरस शब्दचाली अति सुन्दर।
यती ध्रुवाटक झपानीह झपताल ललित वर ॥२४॥
नृत्य प्रकार अनेक रास में सखिन दिखाये।
सूझ अपर पुनि सूझशब्द अशब्द बतलाये ॥२५॥
उच्चारण करि शब्द नटै सोइ सूझ कहावै।
जो तजि शब्द विलम्ब मात्र कुछ कहि नचि जावै ॥२६॥
सूझशब्द तेहि कहैं शब्द जहँ कछु न उचारे।
भाव मात्र से नचै अशब्द सो नृत्य पुकारे ॥२७॥
ऐसे ही बहु नृत्य भेद विवर्त काठक वर।
विन्दु अपर वैपोत सु कालाचारी सुख कर ॥२८॥
देशीकट्टरि वन्द कल्प जक्करी खण्डवर।
ध्रुपद परम मन रमन नृत्य बहु भेद मोदकर ॥२९॥
इन सब में पेरुणी गुण्डली रामहिं अति प्रिय।
परमानँद दातार सुनत सुख पगे मुदित हिय ॥३०॥

परम रसिक संगीत केर मानो पिय जीवन।
जीवतपी संगीत सुधा हृदयेश मुदित मन ॥३१॥
सज्जन सभा मझार अखिल महि में उदार वर।
केवल धर्मात्मा राम रघुवंश दिवाकर ॥३२॥
जग में माने जात पुनः अन्तःपुर माहीं।
जब पिय स्थित होत काम के नृपति कहाहीं ॥३३॥
तहँ सन्तत निशि दिवस मनोजहिं की चर्चा करि।
पावत परमानन्द हृदय में अति उमंग भरि ॥३४॥
वय किशोर सम्पन्न जगत में जेते नायक।
सब के राजा राम श्याम सुन्दर सब लायक ॥३५॥
मुखानुवृत्तिमिलन सु ताल लीलानुवर्त्तनी।
अपर त्रुटित निर्बाह लोक त्रय में सु प्रसरनी ॥३६॥
व्याप्त शक्ति अनूप शब्द सम शब्द षाड़ वर।
गुण गण खानि उदार विपुल वामा सु मधुर तर ॥३७॥
येहि विधि कई सहस्र नवल ललना सुकुमारी।
सन्तत आश्रित रहैं ललन के परम सुखारी ॥३८॥
चतुरभाँति वर वाम बजावत सुठि मृदंग भर।
वंशी रहीं बजाय चतुर्विधि हिय उमंग भर ॥३९॥
गावहिं हिय हर्षाय चतुर्विधि नवला नागरि।
चारि भाँति भामिनी करैं स्तुति गुन आगरि ॥४०॥
चारि प्रकार सु वाम मुदित मन ताल लगावैं।
आठ करैं मिलि नृत्य परम आनन्द समावैं ॥४१॥

इतनी वाम मिलाय एक मंडल कहलावत ।
प्रबन्ध इच्छा हेत सु मंडल भ्रमण बनावत ॥४२॥
पुनि जेहि थल नायिका एक सुमुखी नव नागरि ।
सुठि नर्तकी सु नृत्य करै छवि रूप उजागरि ॥४३॥
अन्य सकल नायिका रहैं छिपि परदा माहीं ।
येहू मण्डल केर भेद इक विज्ञ बताहीं ॥४४॥
सकल भेद सम्पूर्ण रूप से रास मझारी ।
स्थित सभी प्रकार जहाँ रघुवर धनुधारी ॥४५॥
कदा सकल नायिका एक संग नृत्य दिखावैं ।
चक्रवर्ति अवधेश सुवन लखि लखि सुख पावैं ॥४६॥
सखी रास प्रारम्भ माहिं पुष्पांजलि नादी ।
गावहिं लहरी ललित सुन्दरी चक्र अनादी ॥४७॥
करि सु मङ्गलाचरण नाट्य, तांडव, अति मन हर ।
लास्यनृत्य येहि भाँति नृत्य के भेद विपुल वर ॥४८॥
अपर विषम, अरु विकट, और लघु, प्रिय मन हारी ।
येहू नृत्य सु भेद अहैं सब विधि सुख कारी ॥४९॥
प्रथमैं जो पौरुणी और गौंडली बताये ।
उनके भी दश भेद अहैं सब भाँति सुहाये ॥५०॥
पुनि रसभाव समेत चतुर्विधि अभिनय पावन ।
श्री अंजनी कुमार नाट्य पंडित मन भावन ॥५१॥
वर्णन किये जो भेद कहौं सुनिये मन लाई ।
सुठि विभाव, अनुभाव, सात्विक, अति सुखदाई ॥५२॥

व्यभिचारी इन अंग मेल से स्वाद जो आवै।
स्थाई सोइ भाव परम रस रूप कहावै ।।५३।।
निर्विकार चित शान्ति प्राप्त नायिका प्रथम गति।
होवै जो विक्रिया भाव तेहि वदत विमल मति ।।५४।।
पूर्वोक्त जे कहे सबनि में है विभाव वर।
रस जानन को हेतु वही सब भाँति मोद कर ।।५५।।
पुनि विभाव के भेद युगल आलम्बन, प्रिय कर।
उद्दीपन दूसरो वदत रस विज्ञ सुजन वर ।।५६।।
रस को अतिसय शीघ्र सिद्ध आलम्बन करई।
नव नायक नायकनि हृदय में आनँद भरई ।।५७।।
सकलरसन आधार मैथिली रमण रसिक वर।
अलंकार नृत्यादि गीत उद्दीपक सुख कर ।।५८।।
सुनि मंजुल मृदु गीत नृत्य लखि तिय मन माहीं।
प्रगट होत रस राज सो उद्दीपन कहलाहीं ।।५९।।
कलित कटाक्ष सु भेद मन्द मुसुकान वचन वर।
मधुर परम रस भरित यही अनुभाव मोद कर ।।६०।।
नाट्य में शृंगार, हास्य, करुणा रौद्रादी।
वीर, भयानक अद्भुतादि वीभत्स अनादी ।।६१।।
ये ही अष्ट प्रधान सु रस बुध जन बतलावैं।
अस्तम्भादिक आठ सात्विक भाव कहावैं ।।६२।।
अस्तम्भादिक अष्ट भाव स्थाई केरे।
अंगहिं से उत्पन्न होत प्रिय सुखद घनेरे ।।६३।।

यह हम से नहिं होय लाज संकोच महाना।
व्यभिचारी के भेद कहैं बुधि बन्त सुजाना ॥६४॥
नायक अरु नायिका परस्पर दोउन मझारी।
स्थाई दृढ़ प्रेम केर इच्छा अति भारी ॥६५॥
सोई रति कहलाइ बहुरि तिय पुरुपन माहीं।
अभिलाषा बासनामयी सोइ भाव कहाहीं ॥६६॥
जो कटाक्ष को हेतु सरस श्रृंगार मझारी।
प्रथम बीज ये रती भाव ही परम सुखारी ॥६७॥
रति सु अवस्थान्तरन भेद से प्रेम, मान वर।
प्रणय, स्नेह, अरु राग, तथा अनुराग, मोद कर ॥६८॥
होवत समयनुसार यथा सु बीज ही अंकुर।
पल्लव, कली, प्रसून, बनत फल अतिसय सुन्दर ॥६९॥
बढ़ते – बढ़ते भोग अवस्था कई बनावैं।
समयनुसार अनेक भाव रति ही दर्शावैं ॥७०॥
तीन प्रकार कटाक्ष श्याम, सित, श्वेत श्याम दोउ।
मिश्रित एकै माहिं लखै यह भेद कोउ कोउ ॥७१॥
युवा वयस सम्पन्न नवल नायक वर वामा।
चन्द्र चाँदिनी सरिस परस्पर हास्य ललाम ॥७२॥
होवत विविधि प्रकार और श्री राम रास में।
सखियाँ प्रेम विभोर भरीं हिय अति हुलास में ॥७३॥
आङ्गिक, वाचिक, आहार्य, सात्विक, सु भेद वर।
हैं यह चार प्रकार सतत परिकर प्रमोद कर ॥७४॥

कर्तव्यता प्रकार उभय येहि नाट्य मझारी।
वर्णी पवन कुमार तियन मन आनँद कारी ॥७५॥
प्रथम सुखद प्रिय मधुर लोक धर्मी बतलाई।
कर्तव्यता द्वितीय नाट्य धर्मी मन भाई ॥७६॥
पहली के दो भेद सुनिय मन बुधि चितलाई।
चित्त वृत्ति लय करै एक दूसर अस अहई ॥७७॥
वाह्य वस्तुन केर करै अनुकरण सुखारी।
लोकाचार्य न उभय भेद यह कहे पुकारी ॥७८॥
कहे उभय वर भेद नाट्य धर्मी के सुख कर।
श्री हनुमान सुजान प्रेम पूरित उदार तर ॥७९॥
स्थिर, रेखा, दृष्टि, अश्रम, भ्रमरी, मन हारी।
परम प्रेम रस दान वेग वाला सुखकारी ॥८०॥
प्रीति, गीति, चय, और ललित मेधा, मन भावन।
ये तिन के दश प्राण करैं जो गान सुहावन ॥८१॥
जहाँ इसारा अंग केर स्पष्ट जनावै।
भाव सूचना प्रगट होय उत्साह बढ़ावै ॥८२॥
मार्ग शब्द सो नृत्य बतायो पवन कुमारा।
जानत रसिक नरेश कृपानिधि परम उदारा ॥८३॥
अविनत्र वर्जित गात्र मात्र विक्षेप जनावत।
तेहि को आङ्गिक नृत्य अंजनी सुवन बतावत ॥८४॥
अर्थ शून्य हो जहाँ ताल लय युक्त नृत्य वर।
वाको पवन कुमार सुरेखा नाम मोद कर ॥८५॥

बतलायो पुनि जहाँ नेत्र, शिर, हस्त, अङ्ग वर ।
मिलत देह थिर होय मिटै चंचलता सब कर ।।८६।।
वाहि सुमन दृग हरणि रेखवर कहत सुजाना ।
सुनिये शौनक आदि मुनीश्वर अति मति माना ।८७।।
सम्प्रदाय अनुसार होत जो नृत्य मधुर तर ।
बोलत मुद्रा वाहि हृदय रंजनी सुबन वर ।।८८।।
जासु नृत्य में हिलत सतत सुठि मध्य भाग वर ।
मध्य नृत्य तेहि कहत सहस संगीत विज्ञ तर ।।८६।
जहाँ हाथ हो वहीं दृष्टि मन नृत्य मंझारी ।
रहत जहाँ मन होत वहीं पर भाव अपारी ।९०।।
होत जहाँ पर भाव वहीं रस प्रगट लखावत ।
रस की स्थिति पूर्ण नृत्य में ही प्रगटावत ।।९१।।
अपर नृत्य के भेद अङ्ग से गति आलम्बन ।
करै हाथ से अर्थ दिखावै परम मुदित मन ।।९२।।
दृग से प्रगटै भाव पावँ से ताल लगावै ।
सकल अङ्ग सम्पन्न पूर्ण यह नृत्य कहावै ।।९३।।
सप्त भेद गति केर नृत्य में प्रथम मनुज गति ।
द्वितिय मीन गति और तृतिय वर्णों निर्मल मति ।।९४।।
प्रिय गजलीला तरङ्गिनी अरु मृगी सु हंसी ।
येही भेद गति केर विज्ञ संगीत प्रसंसी ।।९५।।
अपर भेद गति केर हंस, लावा, मयूर, वर ।
कुन्जर, अश्व, सु मीन, सु कुक्कुट, तीतिर, सुख कर ।।९६।।

ये गति अष्ट प्रकार नृत्य में कहत सुजाना ।
श्री अंजनी सु अंक मोद प्रद श्री हनुमाना ॥९७॥
जहाँ वीर रस सहित पुरुष उत्साह समेता ।
नृत्यत परमानन्द हेत उमगाय सचेता ॥९८॥
रौद्र भाव जब प्रगट होय तेहि नृत्य मझारी ।
वाको "सीताशरण" कहैं तांडव सुखकारी ॥९९॥

दो०—पुनि पिय आयसु पाय कर, विलासिनी वर नारि ।
पुरुष वेष निर्माण करि, नर्तहिं नर्तकी चारि ॥३॥

करहिं सु तांडव नृत्य ग्राम त्रय अभिनय करहीं ।
पगीं पिया के प्यार हृदय में आनँद भरहीं ॥ १ ॥
युवा वयस सम्पन्न विलासिनि नवल कामिनी ।
सुन्दर परम प्रवीण सुखद प्रिय सरस भामिनी ॥ २ ॥
कामाशक्त विशेष नमहिं निज अङ्ग हार सम ।
अति चतुरता समेत करैं वर नृत्य सु अनुपम ॥ ३ ॥
लास्य नृत्य तेहि कहैं लास्य कुमार अँग वाला ।
वर्धक मकरध्वजहिं परम मन रमन रसाला ॥ ४ ॥
येहि विधि परम विलास पगे श्री राम रसिक वर ।
तिनके रास मझार नृत्य के भेद मोद कर ॥ ५ ॥
सकल रहस सम्पन्न सर्वदा मन अभिरामहिं ।
चक्रवर्ति नृप सुवन भुवन भूषण श्री रामहिं ॥ ६ ॥
खूब करायो रमण सखिन अनुराग समेता ।
करि क्रीड़ा कमनीय मधुर प्रिय सरस सचेता ॥ ७ ॥

स्वयं प्रवीण उदार रास के लास्य रसिक वर ।
अब सु राग रँग भेद करत वर्णन उमंग भर ॥ ८ ॥
युगल भेद येहि केर सुनिय मन चित्त लगाई ।
प्रथम सहज लालिमा मन्द मुसुकान सुहाई ॥ ९ ॥
पात्र नृत्य जो करत स्वमुख ताम्बूल चबाये ।
कृत्रिम मुख लालिमा भेद यह द्वितिय कहाये ॥१०॥
नृत्य करत जो पात्र भेद दोउ राग सुहावन ।
सहज सु कृत्रिम युगल लगत सुन्दर मन भावन ॥११॥
चतुर्भेद येहि केर स्वभाविक, अरु प्रसन्न, तर ।
तृतिय रक्त के रंग श्याम चौथा प्रिय मन हर ॥१२॥
जो स्वाभाविक अहै सहज सोई कहलावै ।
होत स्वभाव से प्रगट सबहिं मन मोद बढ़ावै ॥१३॥
पुनि प्रसन्न है मधुर सरस शृंगार मझारी ।
प्रगटै अद्भुत हास्य सु रस से करै सुखारी ॥१४॥
पुनि जो लोहित अहै रक्त रँग वही कहावत ।
अद्भुत, वीर, सु करुण, रौद्र रस सों प्रगटावत ॥१५॥
जो चतुर्थ है श्याम, श्याम ही याको जानो ।
प्रगटत रस वीभत्स भयानक से अस मानो ॥१६॥
येहि विधि राजिव नयन श्याम सुन्दर रघुनन्दन ।
भोक्ता सब रस केर प्रेम पालक जग वन्दन ॥१७॥
वाद्य पाठ से वाद्य भेद जेहि नाट्य मझारी ।
वाही को यति नृत्य कहत विद्वान पुकारी ॥१८॥

मार्गताल से होय नृत्य जो रास ताल युत।
उसका सुन्दर नाम शब्द चाली उदार चित ॥१९॥
बतलाये अंजनी सुवन श्री वायु पुत्र वर।
सुनि हिय धारण करहु परम सुख सहित मुदित उर ॥२०॥
शब्द वर्ण से परम विभूषित विविधि प्रकारा।
नेरी, चित्र, सु मित्र, कर्णनेरी, सुख सारा ॥२१॥
एकनेत्र, दृग, जार, मान, कर्तरी, हुल्ल, बर।
मुररी, गुरुः लावणी, सु तुल्लक नृत्य मोद कर ॥२२॥
याके बढ़कर होत भेद द्वादश सुखदाई।
क्रम से आगे यही कुड्डक वाली कहलाई ॥२३॥
आदि ताल के सहित विलम्ब से जो प्रगटावत।
रेखा मुद्रा आदि भेद भूषित दर्शावत ॥२४॥
चक्र सदृश चहुँदिशा भ्रमण करि नृत्यै कोई।
वाको नेरी नृत्य कहत बुध जन सब कोई ॥२५॥
अधिक वेग के साथ होय बहुनेरी नामा।
याही को हो जात देत अतिसय अभिरामा ॥२६॥
जहँ रस भाव जनाय भाव नेरी कहलावै।
शुद्ध पताका आदि भेद वामे बनि जावै ॥२७॥
तब वाको बुध कहैं शुद्ध नेरी मति माना।
श्रीमत्पवन कुमार रसिक जीवन हनुमाना ॥२८॥
हस्त मिलै या नहीं नृत्य वह सालग बोलत।
निरखत सहित सनेह हृदय अन्तर रस घोलत ॥२९॥

बिबिधि भेद उपदेश होय जेहि नृत्य मझारी।
वह सङ्कीरण नेरि नृत्य बुध बदत सुखारी ॥३०॥
त्रय साधन संयुक्त नटै जो नर्तक कोई।
सरस सुखद सुठि भिन्न नृत्य कहलावत सोई ॥३१॥
जो पै चाल विचित्र युक्त होवै तो वाही।
रेखा सौष्ठव नृत्य कहावत सुखद सुहाही।३२॥
एक ताल से चित्रतर सु मारग दिखलावैं।
चित्र नृत्य तेहि कहत दर्शकहिं मोद बढ़ावैं।३३॥
क्रीडाताल समेत वाल क्रीडा के राधन।
चक्र सदृश गति केर करै सङ्कोच प्रसारन ॥३४।
मित्र नृत्य तेहि कहत बहु जो नृत्य सुहावन।
करै सूचना समा और विषमा मन भावन ।३५॥
मध्य मान तर होय पुनः जो आदि ताल से।
भ्रमण करै चहुँदिशा फसै चित रूप जाल से ॥३६॥
जारमान मोदित सु नाम तेहि को सुशील तर।
वतलायो अंजनी सुवन श्री हनूमान वर ॥३७॥
स्थित हो उत्कट सु थलहिं सीधा शरीर करि।
पुनि निर्भय हो चहूँ ओर घूमैं उछाह भरि ॥३८॥
तो वह क्रीड़ा ताल सहित तेहि त्रण कहलावैं।
दर्शक गण के हृदय माहिं अति मोद बढ़ावै ॥३९॥
अलंकार अनुकूल पताका तीन समेता।
करै जो कोइ आक्षेप हृदय से परम सचेता ॥४०॥

पुनि एक पावँ उठाय देह को सुथिर बनाई ।
ललित गीत के साथ परै कोइ देह घुमाई ।।४१।।
पुनि लघुशेखर ताल सहित बहुबार मोद भरि ।
आलम्बन जो करै वाहि को विपुल क्रिया करि ।।४२।।
हुल्ल नृत्य तेहि कहत पुनः नर्तक सुखपाई ।
सम स्थित हो जाय हाथ कटि माहिं लगाई ।।४३।।
अर्ध चन्द्र आकार सुकटि में हाथ लगावै ।
पंचमताल समेत कटि उपर अंग चलावै ।।४४।।
कहत लावणी नृत्य वाहि पुनि कटि कर धारीं ।
भ्रमण करै चहुँ ओर नृतत मन मोद अपारी ।।४५।।
अर्धचक्र सो नृत्य कहावत बहुरि मोद भरि ।
पंचम राग समेत कटि उपर अंग भ्रमण करि ।।४६।।
आदिताल में बार-बार द्रुत वाम दहिन दोउ ।
निज सुजंघ को भ्रमण करै हिय मोद सहित कोउ ।।४७।।
कहत कर्तरी नृत्य वाहि पुनि जग लीलक युत ।
चहुँदिशि करै सुनृत्य सकल दिशि मन अति प्रमुदित ।।४८।।
लगै दर्शकन सु प्रिय तुल्ल सो नृत्य कहावत ।
नृत्य कला मर्मज्ञ विज्ञ वर यही बतावत ।।४९।।
पुनि जहँ बारम्बार भुजा फैलाई जावैं ।
आदिताल के सहित पावँ तेहि भाँति चलावैं ।।५०।।
पुनि मेढक के सदृश कूद कर नृत्यै जोई ।
पावँ छुटन न ताल पूर्व थल आवै सोई ।।५१।।

काव्य करण तेहि नाम बतावत नाट्य विज्ञ वर।
अपर सु बुध तांडव कहत हिय में प्रमोद भर ॥५२॥
यदि कर्णाटक देश केर भाषा में अभिनय।
करै तो उत्प्लुतलीग नाम याको होवै प्रिय ॥५३॥
पुनि कराग्र को एक पावँ से बाँध नृत्य करि।
आलम्बन दूसरे पावँ को करै मोद भरि ॥५४॥
कराग्र ही से करै नृतक रङ्गाल नृत्य वर।
वाको सुन्दर नाम बतावत बुध सुजान तर ॥५५॥
यदि हस्ताग्रै बाँधि कूद पत्ती सम ऊपर।
पावँ घुमकर बहुरि ताहिलै आवै भू पर ॥५६॥
तो अडाल वर नृत्य वाहि बुध जन बतलावैं।
यदि कराग्र को बाँधि बराबर चरण मिलावैं ॥५७॥
और कूद गिरि परै भूमि में तो तेहि नामा।
होवत है निःकम्प नृत्य वर अति अभिरामा ॥५८॥
एक पावँ फैलाय अपर से उल्लङ्घन करि।
हाथ देहि मिलाय वाहिं में हिय उमंग भरि ॥५९॥
लङ्घित जंघ सु नृत्य नाम तेहि को बतलावत।
आटनृत्य येहि काहिं सु कर्णाटकी बतावत ॥६०॥
और उसी में अग्र भागपग केर मिलावै।
तो फिर वह ही नृत्य सुभग डन्तर कहलावै ॥६१॥
इसी तरह हुरमयी अपर पत्ती टङ्की वर।
देहिक अरु शार्दूल और चीसम्ब मोद कर ॥६२॥

विदुष भेद संयुक्त नृत्य यह विविध प्रकारा ।
नाटय कला विद्वान सु संग्रह करत अपारा ॥६३॥
शब्द नृत्य के उभय भेद एक वर्ण सम्मिलित ।
स्वर प्रधान दूसरा नृत्य कहलात अति ललित ॥६४॥
इसी केर वर भेद विवर्तन नृत्य कहावत ।
पुनि वाके पश्चात् नृत्य मत्कार बतावत ॥६५॥
गति स्वर हो एकमाहिं कहत तेहि आत्यनृत्य वर ।
येहि के बहुतक भेद अहैं ध्रुव मण्ठ मोद कर ॥६६॥
रूपक अरु एकताल सुभग पुनि कम्पताल वर ।
सप्तताल मन हरन परम सुन्दर अति सुख कर ॥६७॥
मार्ग शब्द के सहित उसी में बिन्दु नृत्य वर ।
अपर अहैं बड़बिन्दु युग्म कालाचारी तर ॥६८॥
पिल्लु अपर गुरुपिल्लु एक गुरु पद्म नाम वर ।
कहरि ठालिका और धरुपदी परम मोद कर ॥६९॥
सूलू अरु मोहनी और पद बन्धन सुख कर ।
कल्प नृत्य अति सरस मधुर सब को अति मनहर ॥७०॥
विपन निबासिन केर बिपुल भाषा युत सुठि तर ।
बहुत वाद्य संयुक्त कहैं जक्करीं मोद कर ॥७१॥
जो भाषा चातुर्य पूर्ण सम्पादित आही ।
यदपि बिपुल गुण दोष भरी रसिकेश सराही ॥७२॥
इन सब के गुण दोष प्राकृतिक प्रभुहिं न पर्शत ।
सबरी भाषन माहिं राम रघुवर गुण दर्शत ॥७३॥

ध्रुवपद नृत्य रसाल सिया रघुवरहिं परम प्रिय ।
सुन्दर भाषा मध्य देश भूषित उदार हिय ।।७४।।
पुनि निज गुण गण सनी प्रेम पागी अति मृदु तर ।
भक्ति भावना भरी प्यार पूरित अति सुख कर ।।७५।।
अति प्रिय प्रीतम प्रियै भाव से शून्य भेद वर ।
बानी बिमल विशेष नहीं होवै प्रमोद कर ।।७६।।
कारण श्री जानकी कान्त कमनीय केलि कर ।
सज्जन सुखद सनेह सने गति परम मधुर तर ।।७७।।
भक्तन जीवन प्राण--प्राण सम तिनहिं सँवारत ।
जग तजि (सीताशरण) प्राण उन पर जो वारत ।।७८।।
ते जन अति प्रिय प्रभुहिं बने जो उनके दासा ।
गावत गुण गण सतत भरे हिय परम हुलासा ।।७९।।
होवै सभ्य असभ्य सकल भाषा प्रभु को प्रिय ।
जो पै प्रेम पियूष सनी प्रगटै पावन हिय ।।८०।।
सामगान से अधिक मान वाको प्रभु देवत ।
सुनत परम सुख मानि हृदय अन्तर रखि लेवत ।।८१।।
प्रेम भाव से शून्य वेद हू की वरबानी ।
होवत "सीताशरण" नहीं प्रभु को सुख दानी ।।८२।।
सुनेउ श्रवण अस चरित रहा एक यवन पुजारी ।
नित गावै सिय राम केलि कौतुक मन हारी ।।८३।।
प्रभु गुण गण की अग्नि माहिं अघ सकल नशाये ।
पुनि पठयो निज धाम वाहि आनन्द समाये ।।८४।।

यासे गायक होय चहै वर वाद्य वजायक।
चाहै स्तुति करै सतत सुन्दर रघुनायक॥८५॥
या प्रभु केर स्वरूपकेर होवै ज्ञाता वर।
अथवा हो कोइ नृत्य कार सब विधि सुशील तर॥८६॥
यदि हिय में भावना भक्ति प्रभु चरण माहीं।
तो प्रभु को प्रिय परम कदा कछु संसय नाहीं॥८७॥
जग के नर्तक सकल भक्ति युत प्रभुहिं पियारे।
वर्णत सज्जन बृन्द सन्त श्रुति शास्त्र पुकारे॥८८॥
साम वेद ध्वनि यदपि राम को परम पियारी।
सुनि रघुवंश कुमार हृदय में होत सुखारी॥८९॥
पर यदि भक्ति विहीन धर्म कृत तत्पर द्विज वर।
साम वेद उच्चरै सुनै नहिं रघुवर छबि धर॥९०॥
यवन आदि भी प्रेम सहित प्रभु गुण गण गावै।
भक्ति भावना भरित हृदय अभिमान भुलावै॥९१॥
तो द्विज वर कृत भक्ति रहित तजि सामवेद ध्वनि।
होवत परम प्रसन्न यवन कृत गीत ललित सुनि॥९२॥
गायक द्विजवर येन केन विधि प्रभु गुण गावत।
दोष न देखत तासु नाथ सुनि अति सुख पावत॥९३॥
वह द्विजराज कहात सुधा कृत पान सदृश अति।
पवित्र आत्मा होय परम विज्ञानी शुचि मति॥९४॥
स्वपच आदि सब काहिं होत जो पावन कारी।
अस श्री सूत सुजान मनोहर गिरा उचारी॥९५॥

यह प्रसंग हम तुमहिं सुनायउ शौनक मुनि वर ।
अब सो सुनहु प्रसंग कहा जो ऊपर सुठि तर ॥९६॥
ममण्डल अरु गौंडली गणक यह नृत्य भेद वर ।
ईश्वर वर्णित अहैं सुखद अति सरस मधुर तर ॥९७॥
येहि बिधि नृत्य सु भेद बिपुल गन्धर्व कुमारी ।
प्रगटाये भरि नेह गीत गाये मन हारी ॥९८॥
सुनि रसिकेश नरेश सुवन अति भये सुखारी ।
श्री विदेहनन्दिनी सुमुख लखि गिरा उचारी ॥९९॥
बोले हे मैथिली मंजु मूरति मन भावन ।
क्या प्रसन्न भइं आप निरखि यह नृत्य सुहावन ॥१००॥

दो०—ये सुर पुर की नर्तकी, सुधा सरिस प्रिय गान ।
सीताशरण तुमहिं लग्यो, क्या प्रिय करिय बखान ॥४॥

सुनि इमि पिय के बचन परम मन हरन मधुर तर ।
बोलीं श्री मैथिली सरस तर वयन भाव भर ॥ १ ॥
हे जीवन धन प्राण कान्त कमनीय कलाकर ।
सुनि इन के वर गीत भई मैं अति प्रसन्न तर ॥ २ ॥
इन के सुठि संगीत सरिस प्रिय मोहिं कछु नाहीं ।
सत्य-सत्य मम बचन नाथ मानिय मन माहीं ॥ ३ ॥
येहि को कारण यही आप मोहिं परम पियारे ।
लखि इन को वर नृत्य गीत सुनि राजदुलारे ॥ ४ ॥
बज्र सु रेख अदृश्य आप मम हृदय कमल में ।
सब विधि गये समाय लाल लम्पट हिय थल में ॥ ५ ॥

रावरि कृपा प्रसाद निरखि यह नृत्य सुहावन ।
मैं निज अति सौभाग्य बिचारौं हे मन भावन ।। ६ ।।
न तरु अवनिथल माहिं मनुज को अति दुर्लभ तर ।
यह संगीत रसाल नाथ गुण गान सरस तर ।। ७ ।।
यह अमरन को भोग्य कहहु कैसे नर पावैं ।
करै कोटि किन यत्न वृथा श्रम विपुल उठावैं ।। ८ ।।
हे जीवन धन नाथ आप को जन्म धन्य तर ।
ऐसे सुख नित नव्य भव्य भोगत प्रसन्न उर ।। ९ ।।
ये गन्धर्व कुमारि बिपुल सब अति मन हारी ।
चित्र विचित्र रसाल गीत गावहिं सुख कारी ।।१०।।
जो हम तुम दोउ काहिं लगत है अतिसय प्रिय कर ।
प्रीतम तुम नहिं मनुज गीत बतलावत सुठि तर ।।११।।
जससुख भोगत आप सतत तस मनुज न पावत ।
करि-करि कोटि कलेश हृदय में चाह बढ़ावत ।।१२।।
हे रसिकेश उदार प्रेम लम्पट नव नायक ।
सुन्दर सुखद सुजान नेह वर्धक सब लायक ।।१३।।
ये गन्धर्व कुमारि बहुरि नृत्यैं उमगाई ।
कीजिये ऐसी कृपा राजनन्दन हर्षाई ।।१४।।
प्रिया बचन इमि सुनत प्रबल उत्कण्ठा जानी ।
प्रगटउ तिन गन्धर्व नगर अद्भुत छबि खानी ।।१५।।
मणि विरचित नग जड़ित सु मुक्तन सकल अलंकृत ।
सब गन्धर्व कुमारि पिया सँग बिचरत शोभित ।।१६।।

वाही नगर मझार मुदित गन्धर्व कुमारी।
नवल सु रास बिलास केलि कौतुक बिस्तारी ॥१७॥
श्री नरराज कुमार बीच में उन ने कीने।
चहुँदिशि नव नायिका लसैं अंशन भुज दीने ॥१८॥
अति आनन्द विभोर प्रेम मद छकीं छबीली।
नृत्यैं हिय उमगाय नटी इव गुण गर्वीली ॥१९॥
सब सुधि गईं भुलाय सु बस्त्राभरण गिरे तन।
श्री मैथिली समच्छ त्यागि लज्जा प्रमुदित मन ॥२०॥
पिय अंशन भुज धारि कण्ठ लगि हिय लपटाईं।
करैं केलि कमनीय अधर रस चखि हर्षाईं ॥२१॥
नखच्छत तन में बने सकल विहसैं मद मातीं।
नृत्यैं अतिसय मुग्ध भाव भरि अति इठलातीं ॥२२॥
लखि इन को यह चरित प्राण वल्लभ रसिकेश्वर।
होवत अति भय भीत बिचारत मन हृदयेश्वर ॥२३॥
लखि इन की यह केलि प्रथम ज्यों प्राण पियारी।
जनि मन ठानै मान होय मोकहँ दुख भारी ॥२४॥
अस निज हृदय बिचारि रसिक चूड़ामणि छबि धर।
मुक्तरचित आभरण प्रियै शृंगारेउ मुद भर ॥२५॥
अनरगम्य सुख स्वाद लेन हारे नृप नन्दन।
जाहि मनुज नहिं लहत वाहि भोगत जग वन्दन ॥२६॥
पुनि गन्धर्व कुमारि सहित मैथिली संग पिय।
लागे करन बिहार रास रस अति उमंग हिय ॥२७॥

जिन के सदृश न अपर कोइ कारज करि पावै ।
करै पराक्रम कोटि भाँति श्रम बिपुल उठावै ॥२८॥
अखिल लोक से भिन्न धर्म जो करै न कोई ।
हो न सकै आरूढ़ कष्ट बहु पावै जोई ॥२९॥
पुनि पिय के संकल्प प्रगट भो रुचिर विमाना ।
तेहि पर सहित समाज चढ़े सिय राम सुजाना ॥३०॥
तब बोले प्राणेश प्रिया से बचन मधुर तर ।
हे विदेहनन्दिनी प्राण वल्लभे सुखद वर ॥३१॥
यह विमान जो प्रगट झूठ जनि याको मानो ।
चलत सकृत संकल्प मात्र अस निज जिय जानो ॥३२॥
परम दिव्य यह यान कामचारी सुखदाई ।
जेहि में करैं बिहार आप हम सखि समुदाई ॥३३॥
सुनि पिय के इमि बचन रचन श्री राजकिशोरी ।
बोलीं बानी बिमल परम प्रेमामृत बोरी ॥३४॥
हे जीवन धन नाथ सत्य सङ्कल्प तिहारो ।
तो किमि मिथ्या यान आप निज हृदय बिचारो ॥३५॥
आगम निगम पुराण तुमहिं हे प्राण अधारे ।
बतलावत सङ्कल्प सत्य शुचि सन्त पुकारे ॥३६॥
जेहि मानव को भाग उदय होवत जेहि काला ।
वाको यावत बस्तु होत सुठि सुखद रसाला ॥३७॥
तब तक वाके भाग्य प्राप्त कोइ बस्तु झूठ नहिं ।
होवत हे प्राणेश वाहि केहु भाँति कदा कहिं ॥३८॥

याते हे हृदयेश आप को भाग्य उदारा।
सर्वोत्तम कमनीय सुधामय सुखद अपारा ॥३६॥
मोक्ष रूप सब काहिं सतत ही वन्दन योगा।
नमस्कार के योग्य प्रदायक सब सुठि भोगा ॥४०॥
तुम्हरी कृपा प्रसाद योगि जन वस्तु अपारा।
प्रगटत निज सङ्कल्प मात्र से बिबिधि प्रकारा ॥४१॥
तब तुम्हरो सङ्कल्प मृषा किमि होवे प्यारे।
सब बिधि पूरण काम आप अवधेश दुलारे ॥४२॥
पुनि पिय प्यारी मुदित संग गन्धर्व कुमारी।
उतरि यान से चले हृदय में परम सुखारी ॥४३॥
कलित केतकी केर सुमन कृत मण्डप मनहर।
अति रमणीय विशाल सुखद वर परम मधुर तर ॥४४॥
तेहि फुल बँगले माहिं प्रिया प्रीतम सँग सखि गन।
बैठि गईं चहुँ ओर प्रेम पूरित प्रसन्न मन ॥४५॥
कहत सूत हे विप्र प्रवर श्री शौनक मुनि बर।
यह वृष की संक्रान्ति माहिं रासादि मधुर तर ॥४६॥
जेष्ठ मास मधि युगल प्रिया प्रीतम बिहार वर।
रासादिक रमणीय केलि कौतुक कलोल कर ॥४७॥
जग में सबहिं अप्राप्य चरित यह परम दिव्य तर।
याको नाश न होय कदा प्राचीन सुखद वर ॥४८॥
मैंने श्री गुरु देव व्यास की कृपा प्रसादा।
बिमल चरित उर धारि लह्यो अतिसय अह्लादा ॥४६॥

यदपि चरित प्राचीन तदपि श्री गुरु बर दाया ।
मैं प्रत्यक्ष सदृश्य हृदय में अति सुख पाया ॥५०॥
पिय प्यारी की केलि परम पावन मन भावन ।
मोहिं प्रत्यक्ष लखात सतत सब भाँति सुहावन ॥५१॥
सोइ हम तुम से कहेउ विचारिय निज मन माहीं ।
कीजिय सन्तत ध्यान अपर येहि सम कछु नाहीं ॥५२॥
यह रस रास रसाल हृदय में जो नित ध्यावत ।
निश्चय 'सीताशरण' कृपा सिय पिय की पावत ॥५३॥
जयति मानिनी सीय पिया हिय आनँद दानी ।
जय--जय भरी सनेह शील गुण निधि रस खानी ॥५४॥
जयति रसिक रस दान सखिन सँग रास विहारी ।
जय--जय पिय गन्धर्व सुतनि हिय आनँद कारी ॥५५॥
जयति मैथिली मधुर मनोहर पिय हिय लागी ।
जय--जय जीवन प्राण प्रियै निरखत रस पागी ॥५६॥
जयति किशोरी कलित कृपा मयि प्रेम विभोरी ।
जय-जय 'सीताशरण' रसिक वर सिय दृग जोरी ॥५७॥
जयति केतकी कलित सुमन कृत मण्डप मन हर ।
जय--जय युगल किशोर केलि क्रीड़ारत तत्पर ॥५८॥
जयति नवल नायिका नेह पूरित रस पागीं ।
जय-जय सब गन्धर्व सुता सिय पिय अनुरागीं ॥५९॥
जयति अमल आनन्द कन्द सिय पिय रस सागर ।
जय--जय रास विहार मगन रस वश नव नागर ॥६०॥

जयति युगल सरकार सतत परिकर मन भावन।
जय--जय "सीताशरण" प्रेम लम्पट पिय पावन ।।६१।।

दो०-जयति किशोरी कृपा मयि, जय-जय प्राण अधार।
जय-जय सीताशरण प्रिय, जय-जय दोउ रिझवार ।।१।।
जयति स्वामिनी सीय मम, जय-जय नृपति कुमार।
जय-जय युगल किशोर वर, जय-जय परम उदार ।।२।।
जयति लाड़िली सुठि सुखद, जय-जय सिय हियहार।
जय-जय पिय प्यारी युगल, जय-जय रस दातार ।।३।।
जयति मैथिली मोद निधि, जय-जय पिय रिझवार।
जय-य सीताशरण दोउ, मम जीवन आधार ।।४।।

इति श्री युगल रहस्य माधुरी बिलासे, बिबाहोत्तर
गन्धर्व कन्या रस रासे, सीताशरण सुमति प्रकाशे
एकादशोऽध्याय: सम्पूर्णमस्तु।

* द्वादशोऽध्याय: *

* मिथुनार्के किन्नरसुता रास प्रकरणम् *

छन्दरोला—

श्री रघुवर प्रिय भक्त सकल भक्तन हितकारी।
सर्व समर्थ उदार वायु नन्दन सुखकारी ।। १ ।।
बुद्धिमान सज्जन सुमित्र अंजनी सुवन वर।
भाव भक्ति भंडार भक्त पालक सुशील तर ।। २ ।।
श्री हनुमान सुजान चरण में कोटि प्रणामा।
करौं सनेह समेत मोहिं दीजिय विश्रामा ।। ३ ।।